कसायपाहुडं भाग-2 (फोल्डर नं. 001408)

मुख्य टाइटल
प्रकाशककी ओर से ---5
इन्ट्रोडक्शन---8
प्रस्तावना --9
विषय-परिचय -- 11
शुद्धिपत्र -- 16
विषयसूची --- 17
1. बाईसवीं गाथा --1
1. बाईसवीं गाथा का अर्थ ---2-3
2. आचार्ययतिवृषभके चूर्णिसूत्रका आश्रय लेकर विभक्तिका कथन --------------------------------- 4-13
3. विभक्ति शब्द के आठ अर्थ
4. नामविभक्ति और स्थापनाविभक्ति का अर्थ--5
5. द्रव्य विभक्तिका कथन --5-6
6. क्षेत्रविभक्तिका कथन ---7
7. कालविभक्तिका कथन ---8
8. संस्थानविभक्तिका कथन--- 9-11
9. भावविभक्तिका कथन---12-13
10. --- आ
चार्य यतिवृषभने चूर्णिसूत्रमें 2 का अंक क्यों रक्खा, इसका खुलासा---------------------------- 14
11. --- 2
के अंकसे सूचित अर्थ का कथन --- 15
12. --- उ
क्त विभक्तियोंमें से यहां कर्म विभक्ति नामकी द्रव्यविभक्तिसे प्रयोजन है इसका कथन--------- 16
13. --- अ
पने द्वारा माने गये अर्थाधिकारोंको गाथा सूत्रमें दिखलानेके लिये आचार्य यतिवृषभके द्वारा 22वीं गाथाका व्याख्यान ---17-18
14. --- प
दके भेद और उनका अर्थ -- 17
15. --- य
तिवृषभके अभिप्रायसे इस गाथासे 6 अर्थाधिकार सूचित होते हैं और गुणधरा चार्यके अभिप्रायसे दो ही अर्थाधिकार बतलाये हैं इसका कथन--- 18
16. --- प्र
कृति विभक्तिका कथन करनेकी प्रतिज्ञा--- 18

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

17. ---------- य
तिवृषभका कथन गुणधराचार्यके पारतिकूल नहीं है इसका कथन---------- 19
18. ---------- प्र
कृति विभक्तिके भेद ---------- 20
19. ---------- मू
लप्रकृतिके साथ विभक्ति शब्द रखनेमें आपत्ति तथा उसका परिहार ---------- 20
20. ---------- य
हां मोहनीय कर्मकी ही विवक्षा क्यों है? इसका समाधान ---------- 20
21. ---------- आ
ठों कर्मोंमें प्रकृति विभक्ति यानी स्वभाव भेदका कथन---------- 21
2. मूलप्रकृतिविभक्ति----------22-79
1. ---------- मू
लप्रकृतिविभक्तिके आठ अनुयोगद्वार---------- 22
2. ---------- उ
च्चारणाचार्यने मूलप्रकृति विभक्ति के 17 अर्थाधिकार कहे हैं और यतिवृषभने आठ, दोनों में विरोध क्यों नहीं है? ---------- 22
3. ---------- आ
ठ अधिकारोंके द्वारा शेषका ग्रहण---------- 22
4. ---------- स
मुत्कीर्तनानुगमका कथन---------- 23
5. ---------- सा
दि अनादि ध्रुव और अध्रुवानुगमका कथन----------24-25
6. ---------- स्वा
मित्वानुगमका कथन ---------- 26
7. ---------- का
लानुगमका कथन----------27-44
8. ---------- अ
न्तरानुगमका कथन ---------- 44
9. ---------- ना
ना जीवंकी अपेक्षा भंगविचयानुगम----------44-46
10. ---------- भा
गाभागानुगम ----------47-49
11. ---------- प
रिणामानुगम ----------49-53

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

12. ---------- क्षेत्रानुगम ----------53-59
13. ---------- स्पर्शानानुगम ----------60-71
14. ---------- नाना जीवोंकी अपेक्षा कालानुगम ----------71-74
15. ---------- नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरानुगम ----------74-77
16. ---------- भावानुगमका कथन ----------77-78
17. ---------- अल्पबहुत्वानुगमका कथन ----------78-79
3. एकैक उत्तरप्रकृति विभक्ति ----------80-198
1. ---------- उत्तरप्रकृतिविभक्तिके भेद ---------- 80
2. ---------- एकैक उत्तर प्रकृतिविभक्तिका स्वरूप ---------- 80
3. ---------- प्रकृतिस्थान उत्तर प्रकृतिविभक्तिका स्वरूप ---------- 80
4. ---------- एकैक उत्तर प्रकृतिविभक्तिके अनुयोगद्वार ---------- 80
5. ---------- उच्चारणाचार्यके द्वारा कहे गये 24 अनुयोगद्वारों और यतिवृषभाचार्यके द्वारा कहे गये 11 अनुयोगद्वारोंमें अविरोधका कथन----------80-81
6. ---------- किस अनुयोगका किस अनुयोगमें संग्रह किया गया है, इसका कथन ----------81-82
7. ---------- समुत्कीर्तनाका कथन----------83-87
8. ---------- सर्वविभक्ति नोसर्वविभक्तिका कथन ---------- 88
9. ---------- उत्कृष्टविभक्ति अनुत्कृष्ट विभक्तिका कथन ---------- 88
10. ---------- जघन्यविभक्ति अजघन्य विभक्तिका कथन ---------- 89

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

11. ---------- सा
दि अनादि ध्रुव और अध्रुवानुगमका कथन----------89-90
12. ---------- स्वा
मित्वानुगमका कथन----------91-98
13. ---------- ओ
घसे कथन----------91-92
14. ---------- आ
देशसे कथन----------92-98
15. ---------- का
लानुगमका कथन----------99-123
16. ---------- ओ
घसे कथन----------99-100
17. ---------- आ
देशसे कथन---------- 101-123
18. ---------- अ
न्तरानुगमका कथन ---------- 123-130
19. ---------- ओ
घसे कथन---------- 123-124
20. ---------- आ
देशसे कथन---------- 124-130
21. ---------- स
न्निकरर्षका कथन ---------- 130-144
22. ---------- ओ
घसे कथन---------- 130-132
23. ---------- आ
देशसे कथन---------- 133-144
24. ---------- ना
नाजीवोंकी अपेक्षा भंगविचयानुगम---------- 144-150
25. ---------- भा
गाभागानुगमका कथन ---------- 151-157
26. ---------- ओ
घसे कथन---------- 151
27. ---------- आ
देशसे कथन---------- 152-157

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

28. ---------- प
रिमाणानुगमका कथन ---------- 157-163
29. ---------- क्षे
त्रानुगमका कथन ---------- 165-171
30. ---------- ओ
घसे कथन---------- 165-166
31. ---------- आ
देशसे कथन---------- 166-171
32. ---------- ना
नाजीवोंकी अपेक्षा कालानुगम ---------- 171-172
33. ---------- ना
नाजीवोंकी अपेक्षा अन्तरानुगम ---------- 173-174
34. ---------- भा
वानुगमका कथन ---------- 175-176
35. ---------- अ
ल्पबहुत्वानुगमका कथन ---------- 176-198
36. ---------- स्व
स्थान अल्पबहुत्व ओघसे---------- 176
37. ---------- स्व
स्थान अल्पबहुत्व आदेशसे ---------- 177-179
38. ---------- प
रस्थान अल्पबहुत्व ओघसे---------- 179-182
39. ---------- प
रस्थान अल्पबहुत्व आदेशसे---------- 182-198
4. प्रकृतिस्थान उत्तरप्रकृतिविभक्ति ---------- 199-383
40. ---------- प्र
कृतिस्थान शब्दका अर्थ ---------- 199
41. ---------- प्र
कृतिस्थानके तीन भेद---------- 199
42. ---------- उ
नमें से यहां सत्त्व प्रकृति स्थानोंके ही ग्रहण करनेका कथन ---------- 199
43. ---------- प्र
कृतिस्थान विभक्तिके अनुयोग द्वार---------- 200
44. ---------- मो
हनीयके 15 सत्व स्थानोंका कथन---------- 201

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

45. ---------- इ
न सत्व स्थानोंकी प्रकृतियों का कथन---------- 202-204
46. ---------- चौ
दह मार्गणाओंमें स्थान समुत्कीर्तन ---------- 205-208
47. ---------- उ
च्चारणाचार्यके द्वारा कहे अनुयोगद्वारों का कथन---------- 209
48. ---------- सा
दि अनादि ध्रुव और अध्रुवानुगमका कथन ---------- 209-210
49. ---------- य
तिवृषभके द्वारा स्वामित्वानुगमका कथन ---------- 210-221
50. ---------- ए
क प्रकृतिक स्थानका स्वामी कौन है?---------- 210
51. ---------- य
ह प्रश्न गौतम स्वामीने महावीर भगवानसे किया था---------- 211
52. ---------- चू
र्णिसूत्रमें आये मनुष्य शब्दसे पुरुषवेदी और नपुंसकवेदी मनुष्योंका ग्रहण करनेका कथन-- 212
53. ---------- पां
च प्रकृतिक स्थान मनुष्योंके ही होता है मनुष्यिणीके नहीं, इसका कथन---------- 212
54. ---------- इ
क्कीस प्रकृतिक स्थानका स्वामी ---------- 213
55. ---------- बा
ईस प्रकृतिक स्थानका स्वामी ---------- 213
56. ---------- बा
ईश प्रकृतिक स्थानके स्वामीके विषयमें शंका समाधान ---------- 214
57. ---------- कृ
तकृत्य वेदक सम्यग्दृष्टिके विषयमें आचार्य यतिवृषभके दो उपदेशोंका कथन---------- 215
58. ---------- उ
च्चारणा चार्यके उपदेशानुसार कृतकृत्य वेदकके मरण न करनेका कथन---------- 215
59. ---------- ते
ईस प्रकृतिक स्थानका स्वामी ---------- 217
60. ---------- चौ
वीस प्रकृतिक स्थानका स्वामी ---------- 218
61. ---------- वि
संयोजना कौन करता है? ---------- 218

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

62. ---------- वि
सयोजनाका लक्षण ---------- 219
63. ---------- वि
संयोजना और क्षपणामें अन्तर ---------- 219
64. ---------- छ
व्वीस प्रकृतिक स्थानका स्वामी ---------- 221
65. ---------- स
त्ताईस प्रकृतिक स्थानका स्वामी ---------- 221
66. ---------- अ
ट्ठाईस प्रकृतिक स्थानका स्वामी ---------- 221
67. ---------- उ
च्चारणाचार्यके उपदेशानुसार आदेशमें स्वामित्वका कथन ---------- 222-232
68. ---------- का
लानुगमका कथन ---------- 233-280
69. ---------- ए
क विभक्तिस्थानका जघन्यकाल ---------- 233
70. ---------- ए
क विभक्तिस्थानका उत्कृष्टकाल ---------- 236
71. ---------- दो
प्रकृतिस्थानका जघन्यकाल ---------- 237
72. ---------- दो
प्रकृतिस्थानका उत्कृष्टकाल ---------- 238
73. ---------- ती
न प्रकृतिस्थानका जघन्यकाल ---------- 238
74. ---------- ती
न प्रकृतिस्थानका उत्कृष्टकाल ---------- 239
75. ---------- चा
र प्रकृतिस्थानका जघन्यकाल ---------- 239
76. ---------- चा
र प्रकृतिस्थानका उत्कृष्टकाल ---------- 240
77. ---------- पां
च प्रकृतिस्थानका काल ---------- 243
78. ---------- ग्या
रह प्रकृतिस्थानका काल ---------- 244

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

79. ---------- बा
रह प्रकृतिकस्थानका काल---------- 245
80. ---------- ते
रह प्रकृतिकस्थानका काल---------- 245
81. ---------- बा
रह प्रकृतिस्थानके जघन्यकालके विषय में विशेष कथन ---------- 246
82. ---------- इ
क्कीस प्रकृतिकस्थानका काल ---------- 247
83. ---------- बा
ईस प्रकृतिकस्थानका काल---------- 248
84. ---------- ते
ईस प्रकृतिकस्थानका काल---------- 248
85. ---------- चौ
बीस प्रकृतिकस्थानका काल---------- 249
86. ---------- छ
ब्बीस प्रकृतिकस्थानका काल---------- 252
87. ---------- स
त्ताईस प्रकृतिकस्थानका काल ---------- 254-255
88. ---------- अ
ट्ठाईस प्रकृतिकस्थानका काल ---------- 255-256
89. ---------- उ
च्चारणाचार्यके उपदेशानुसार आदेशमें कालका कथन---------- 256-280
90. ---------- अ
न्तरानुगमका कथन---------- 281
91. ---------- ए
क प्रकृतिस्थानका अन्तर नहीं---------- 281
92. ---------- 2
3 से लेकर दो प्रकृतिक स्थानों तकका भी अन्तर नहीं ---------- 282
93. ---------- चौ
बीस प्रकृतिकस्थानका जघन्य अन्तर---------- 282
94. ---------- चौ
बीस प्रकृतिस्थानका उत्कृष्ट अन्तर---------- 283
95. ---------- छ
व्वीस प्रकृतिस्थानका जघन्य अन्तर---------- 283

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

96. ---------- छ
व्वीस प्रकृतिस्थानका उत्कृष्ट अन्तर ---------- 284
97. ---------- स
ताईस प्रकृतिस्थानका जघन्य अन्तर ---------- 284
98. ---------- स
ताईस प्रकृतिस्थानका उत्कृष्ट अन्तर ---------- 285
99. ---------- अ
ट्ठाईस प्रकृतिस्थानका जघन्य अन्तर ---------- 285
100. ---------- अ
ट्ठाईस प्रकृतिस्थानका उत्कृष्ट अन्तर ---------- 286
101. ---------- उ
च्चारणाचार्यके उपदेशानुसार आदेशमें अन्तरकालका कथन---------- 287-292
102. ---------- ना
नाजीवोंकी अपेक्षा भंग विचयानुगम---------- 292
103. ---------- भ
जनीयपदोंके भंग लानेकी विधि---------- 293
104. ---------- वि
धिकी उपपत्ति---------- 294-299
105. ---------- भं
ग निकालनेकी दूसरी विधि ---------- 300-310
106. ---------- स
मस्त मंगोंका जोड---------- 311
107. ---------- आ
देशमें भंगोंका निरूपण---------- 312-315
108. ---------- उ
च्चारणाचार्यके उपदेशानुसार शेष अनुयोगद्वारोंका कथन---------- 316
109. ---------- भा
गाभागानुगमका कथन---------- 316-318
110. ---------- प
रिमाणानुगमका कथन ---------- 319-323
111. ---------- क्षे
त्रानुगमका कथन---------- 324-326
112. ---------- स्प
र्शानुगमका कथन ---------- 326-334

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

113. ---------- का
लानुगमका कथन ---------- 334-344
114. ---------- अ
न्तरानुगमका कथन---------- 344-352
115. ---------- भा
वानुगमका कथन---------- 352
116. ---------- प
दविषयक अल्पबहुत्वका ओघकथन---------- 353
117. ---------- प
दविषयक अल्पबहुत्वका आदेशकथन---------- 355
118. ---------- आ
चार्य यतिवृषभके द्वारा जीवविषयक अल्प बहुत्वका कथन---------- 359-375
119. ---------- उ
च्चारणाचार्यके अनुसार आदेशमें अल्पबहुत्व का कथन ---------- 375-383
5. भुजगार अनियोगद्वारका कथन ---------- 384-424
1. ---------- भु
जकारविभक्तिके सतरह अनुयोगद्वार---------- 384
2. ---------- स
मुत्कीर्तनानुगमका कथन---------- 384
3. ---------- स्वा
मित्वानुगमका कथन---------- 386
4. ---------- ए
क जीवकी अपेक्षा कालका कथन ---------- 387
5. ---------- शे
ष अनुयोग द्वारोंका कथन न करके यतिवृषभके कालका ही कथन क्यों किया इसका
समाधान---------- 387
6. ---------- भु
जकारका स्वरूप ---------- 388
7. ---------- अ
वस्थित विभक्तिकस्थानके कालके तीन भेग ---------- 389
8. ---------- उ
पार्धपुद्गलका अर्थ---------- 391
9. ---------- उ
च्चारण के अनुसार आदेशमें कालका कथन ---------- 391-396

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

10. ---------- अन्तरानुगमका कथन ---------- 397
11. ---------- नानाजीवोंकी अपेक्षा भंग विचयानुगम ---------- 402
12. ---------- परिणामानुगमका कथन ---------- 404
13. ---------- भागाभागानुगमका कथन ---------- 406
14. ---------- क्षेत्रानुगमका कथन ---------- 408
15. ---------- स्पर्शानुगमका कथन ---------- 409
16. ---------- कालानुगमका कथन ---------- 414
17. ---------- उपशम सम्यग्दृष्टिके अनन्तानुबन्धी चतुष्ककी विसंयोजना होनेमें मतभेदकी चर्चा -------- 417
18. ---------- अन्तरानुगमका कथन ---------- 419
19. ---------- देवोंमें अल्पतरके अन्तरकालको लेकर उच्चारणाओंमें मतभेदकी चर्चा ---------- 420
20. ---------- अल्पबहुत्वानुगमका कथन ---------- 422
6. पदनिक्षेप अधिकारका कथन ---------- 425-436
1. ---------- पदनिक्षेप किसे कहते हैं ---------- 425
2. ---------- समुत्कीर्तनानुगमका कथन ---------- 426
3. ---------- स्वामित्वका कथन ---------- 429
4. ---------- अल्पबहुत्वानुगमका कथन ---------- 433
वृद्धिविभक्ति अधिकारका कथन ---------- 437-482
1. ---------- समुत्कीर्तनानुगमका कथन ---------- 437

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

2. स्वामित्वानुगमका कथन ---------- 439
3. कालानुगमका कथन ---------- 442
4. अंतरानुगमका कथन ---------- 449
5. नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचयानुगम ---------- 456
6. भागाभागानुगमका कथन ---------- 459
7. परिमाणानुगमका कथन ---------- 461
8. क्षेत्रानुगमका कथन ---------- 463
9. स्पर्शनानुगमका कथन ---------- 465
10. कालानुगमका कथन ---------- 470
11. अन्तरानुगमका कथन ---------- 475
12. भागाभागानुगमका कथन ---------- 479
13. अल्पबहुत्वानुगमका कथन ---------- 479
परिशिष्ट ---------- 485-493
1. गाथा-चूर्णिसूत्र ---------- 485-488
2. अवतरणसूची ---------- 489
3. ऐतिहासिक नामसूची ---------- 489
4. ऐतिहासिक नामसूची ---------- 489
5. ग्रन्थ नामोल्लेख ---------- 489

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

6. ---------- गाथा-चूर्णिसूत्रगत शब्द-सूची ---------- 489
7. ---------- जयधवलागत विशेष शब्दसूची---------- 491

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org